तीव्रपुरूषार्थी ग्रुपमीटिंग-1

1. बाबा हम सबको बहुत प्यार करता है। फिर भी ज्यादा प्यार किसको मिलेगा? आज्ञाकारी को, सच्चे दिल वालों को, हमारी सच्चाई है ही वफादारी, पवित्रता, यह है आत्मिक प्यार।
2. परेशान रहना या सुखी रहना यह अपने ऊपर है। दूसरों की चिन्ता ना करें। उन्हें सकाश दें तो सब ठीक हो जायेगा।
3. हम कर्मों की गुह्यगति को ध्यान में रख चले तो कभी परेशान नहीं होगें।
4. जो आत्मा आपके लिए किसी भी परेशानी का कारण बनती है, उस आत्मा से मन ही मन माँफी माँग लो तो सब ठीक हो जायेगा।
5. बाबा से मिलन का सुख नही मिलता है तो हम कुछ आत्माओं को क्षमा करें और कुछ से क्षमा माँग ले, तो मिलन का सुख मिलेगा।
6. पाँच तत्व और पाँचों विकार अन्त में पूरे जोर से वार करेंगे तो मन भटके नहीं, उनके प्रभाव से मुक्त रहें उसके लिए हम सावधान रहें। जो हमारे अन्दर में कमी या संस्कार रह जायेगा। वही अन्त में पेपर बन सामने आयेगा। अभ्यास करें मैं मा.सर्वशक्तिवान हूँ।
7. अन्त में काम आयेगी श्रेष्ठ स्थिति, बाबा ना कि धन काम आयेगा। हमें जन्म जन्मान्तर के लिए खजानें जमा कर लें। स्वच्छ बुद्धि बन कर चलें।
8. हमारा चिन्तन, हमारे संकल्प, हमारा सोचने का तरीका यही हमारे श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करते हैं। जो हम चाहते है उसी के बारे में ही सोचें। जो नहीं चाहते वह नहीं सोचें। मेरा योग नहीं लगता हैं?
9. जीवन में हारता वहीं मनुष्य हैं तो अपनी शक्तियों को भूला हुआ रहता है।
10. अमृतवेले उठते ही हम अपने को श्रेष्ठ संकल्पों से चार्ज करें। मैं इस संसार में सबसे भाग्यवान आत्मा हूँ हमें कौन मिला है? इन आँखों से वह सब कुछ देखा जो चारों युगों में नहीं देख सकते आँख खुलते ही हम अपने को आनन्दित करें हमारे से मिलने कौन आया है, सर्व खजानों का दाता। इस प्रकार मिलन का पूर्ण आनन्द लेते सदा उड़ते रहेंगे और उड़ाते रहेंगे।